एकादशः पाठः

नवद्रव्याणि

तर्क शब्द का अर्थ है- प्रमाण (यथार्थज्ञान का साधन)। जो प्रमाण के विषय हैं वे तर्क के अन्तर्गत गृहीत हैं। द्रव्यादि सप्त प्रमेय पदार्थ एवं प्रत्यक्षादि चार प्रमाण तर्क के विषय हैं। इनका संक्षेप से लक्षण एवं परीक्षा करना ही इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य है। तर्क शास्त्र व्याकरण एवं साहित्य आदि शास्त्रों के लक्षणों का पदकृत्य जानने की जिज्ञासा का उत्पादक होने से छात्रों के लिए उपयोगी है। इसके रचयिता अन्नंभट्ट हैं, इनका समय 17वीं शताब्दी माना जाता है। तर्कशास्त्र की मान्यता के अनुसार-द्रव्यादि सप्त पदार्थों के ज्ञान से लोकसिद्धि होकर निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष प्राप्ति होती है। विश्व का समग्र ज्ञान इन सप्त पदार्थों में ही समाहित है।

'तर्कसंग्रह' न्याय एवं वैशेषिक दर्शन के प्रवेश की कुञ्जी है। वैशेषिक दर्शन को भौतिक विज्ञान के प्रति प्राचीन भारतीय योगदान का पोषक ग्रन्थ माना जाता है। छात्र प्राच्य ज्ञान की समृद्ध परम्परा से परिचय एवं उसकी अनुभूति कर सके, यही इस पाठ का उद्देश्य है।

द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समावायाभावाः सप्त पदार्थाः।

तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव।

रूप-रस-गन्ध
-स्पर्श-संख्या-परिमाण-पृथक्त्व-संयोग-विभाग-
परत्वापरत्व-गुरुत्व-द्रवत्व-स्नेह-शब्द-बुद्धि-सुख-दुःखेच्छा-
द्वेष-प्रयत्न-धर्माऽधर्म-संस्काराश्चतुर्विंशतिर्गुणाः।

उत्क्षेपणापक्षेपणाकुञ्चन-प्रसारण-गमनानि पञ्च कर्माणि।

परमपरं चेति द्विविधं सामान्यम्।

नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव।

समवायस्त्वेक एव।

अभावश्चतुर्विधः-प्रागभावः प्रध्वंसाभावोऽत्यन्ताभावोऽन्योन्याभावश्चेति।

द्रव्यलक्षणप्रकरणम्।

तत्र गन्धवती पृथिवी। सा द्विविधा नित्याऽनित्या च। नित्या परमाणुरूपा। अनित्या कार्यरूपा।

शीतस्पर्शवत्य आपः। ता द्विविधाः- नित्या अनित्याश्च। नित्याः परमाणुरूपाः। अनित्याः कार्यरूपाः।

पुनस्त्रिविधाः- शरीरेन्द्रियविषयभेदात्।

उष्णस्पर्शवत्तेजः। तच्च द्विविधं- नित्यमनित्यं च।

नित्यं परमाणुरूपम्। अनित्यं कार्यरूपम्।

पुनस्त्रिविधं- शरीरेन्द्रियविषयभेदात्।

रूपरहितः स्पर्शवान् वायुः। स द्विविधः- नित्योऽनित्यश्च।

नित्यः परमाणुरूपः अनित्यः कार्यरूपः

पुनस्त्रिविधः- शरीरेन्द्रियविषयभेदात्।

शब्दगुणकमाकाशम्। तच्चैकं विभु नित्यं च।

अतीतादिव्यवहारहेतुः कालः। स चैको विभुर्नित्यश्च।

प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक्। सा चैका। नित्या विभ्वी च।

ज्ञानाधिकरणमात्मा। स द्विविधः- जीवात्मा परमात्मा चेति। तत्रेश्वरः सर्वज्ञः। परमात्मा एक एव, जीवस्तु प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च।

दुःखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः। तच्च

प्रत्यात्मनियतत्वादनन्तं परमाणुरूपं नित्यं च।

© NCERT not to be republished

शब्दार्थाः टिप्पणयश्च

द्रव्यम् – द्रव्यत्वजातिमत्वं गुणवत्त्वं वा द्रव्यसामान्यलक्षणम्–गुण एवं क्रिया का आधार (द्रव्य)।

समवायः – इहेदमिति यतः स समवायः, जिसके कारण यह इसमें है, ऐसी अनुभूति होती है, वह समवाय है। यह नित्य सम्बन्ध है जो कार्य-कारण, क्रिया-क्रियावान्, गुण-गुणी एवं जाति और व्यक्ति के बीच होता है।

अभावः – निषेधमुख अर्थात् नहीं है ऐसी अनुभूति का विषय 'अभाव' है। यह चार प्रकार का है- प्रागभव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव, अन्योन्याभाव।

संस्कारः – संस्कारस्त्रिविधः- वेगः, भावना, स्थितिस्थापकश्च। **वेग**-सभी मूर्त्त द्रव्यों में होता है जैसे पृथ्वी, जल, वायु एवं मन। **भावना**- यह आत्मा का गुण है, स्मरण एवं प्रत्यभिज्ञा का कारण यही है। **स्थितिस्थापकः**-पूर्वस्थिति में लौटने का कारण, कारणभूत।

कर्म – चलनात्मकं कर्म- चलने का स्वभाव कर्म है। कर्म के पांच प्रकार हैं- **उत्क्षेपणम्**- उर्ध्वदशसंयोग हेतुः- उर्ध्व स्थान संयोग का कारण। **अपक्षेपणम्**- ओदेशसंयोगहेतुः-निम्नस्थान के संयोग हेतु। **आकुञ्चनम्**- शरीरस्य सन्निकृष्टसंयोगहेतुः- शरीर के संकोचरूपी संयोग का हेतु। **प्रसारणम्**- विप्रकृष्ट-संयोगहेतुः- शरीर के विस्ताररूपी संयोग का हेतु।

गमनम् – उत्क्षेपणादि चार प्रकार के कर्मों के अतिरिक्त समस्त प्रकार की क्रियायें गमन में स्वीकृत हैं।

प्रागभावः – अनादिसान्तः उत्पत्तेः पूर्वं कार्यस्य- जिस अभाव का आदि नहीं हो परन्तु अन्त हो अर्थात् कार्य की उत्पत्ति से पूर्व की अवस्था।

© NCERT not to be republished

प्रध्वंसाभावः – सादिरनन्तः उत्पत्त्यनन्तरं कार्यस्य– जिस भाव का आदि हो अन्त न हो अर्थात् कार्य के प्रध्वंस की परवर्ती अवस्था।

अत्यन्ताभावः – त्रैकालिक संसर्गाभावः– सर्वथा अभाव।

अन्योन्याभावः – तादात्म्यसम्बन्धाभावः– एक का दूसरे में अभाव यथा– घटः पटो न पटः घटो न।

विभुः/विभु/विभ्वी – पुं./नपुं./स्त्री. सर्वव्यापक।

दिक् – प्राच्यादिव्यवहारहेतुः– पूर्वपश्चिम आदि दिशा।

अधिकरणम् – आधार।

प्रत्यात्मम् – आत्मनि आत्मनि इति–हर आत्मा में।

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत।

(क) पदार्थाः कति भवन्ति?

(ख) पृथिव्याः कति भेदाः उक्ताः?

(ग) तेजः कीदृशं कथ्यते?

(घ) अतीतादिव्यवहारहेतुः कः?

(ङ) आत्मा कतिविधः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(क) कस्मात् ग्रन्थात् सङ्गृहीतः एषः पाठः?

(ख) कानि पञ्चकर्माणि पाठे वर्णितानि?

(ग) मनः कस्य साधनम्?

(घ) वायोः कतिभेदाः?

(ङ) अतीतादिव्यवहारहेतुः कालः, स च कीदृशः?

3. मञ्जूषातः पदान्यादाय रिक्तस्थानानि पूरयत।

त्रिविधम्, गन्धवती, प्रसारण, परमाणुरूपः, अनन्तम्

© NCERT not to be republished

(क) आपः शरीरेन्द्रियविषयभेदात्.....भवति।

(ख) वायोः द्वौ भेदौ नित्यः.....अनित्यः कार्यरूपश्च।

(ग) पृथिवी.....सा नित्याऽनित्या, परमाणुरूपा कार्यरूपा च।

(घ) उत्क्षेपणाऽपक्षेपणाऽऽकुञ्चन.....गमनानि पञ्चकर्माणि भवन्ति।

(ङ) मनः प्रत्यात्मनियतत्वात्.....परमाणुरूपं नित्यं च।

4. यथोचितं योजयत।

(क) शीतस्पर्शवत्यः – सर्वज्ञः

(ख) चतुर्विधः – रूपरहितः

(ग) ईश्वरः – अभावः

(घ) वायुः – आकाशम्

(ङ) शब्दगुणकम् – आपः

5. सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धेः नाम लिखत।

नाम

(क) चैकः .....+..... .....

(ख) प्रत्यात्मम् .....+..... .....

(ग) तच्च .....+..... .....

(घ) अभावश्च .....+..... .....

(ङ) पृथिव्यप्तेजः .....+..... .....

6. प्रदत्तपदान्यधिकृत्य वाक्यानि रचयत।

अनित्यम्, चतुर्विंशतिः, नवैव, समवायः, रूपरहितः।

7. पाठात् विपरीतार्थकपदानि चित्वा लिखत।

(क) उत्क्षेपणम्

(ख) सामान्यम्

(ग) अनित्या

© NCERT not to be republished

(घ) पृथिवी
(ङ) अनन्तम्

8.अ. अधोलिखितपदानां मूलशब्दं, विभक्तिं, वचनं, लिङ्गं च लिखत।

(क) द्रव्याणि
(ख) मनांसि
(ग) विभ्वी
(घ) गुणाः
(ङ) लक्षणानि

आ. समस्तपदानां विग्रहं कृत्वा लिखत ।

(क) सप्तपदार्थाः
(ख) अनन्ताः
(ग) शरीरेन्द्रियविषयभेदात्
(घ) व्यवहारहेतुः
(ङ) रूपरहितः

9. कानि पञ्चकर्माणि? सोदाहरणं स्पष्टयत ।

योग्यताविस्तारः

(क) तर्कसङ्ग्रहस्य रचयिता अन्नम्भट्टः। अस्य रचना बालकानां कृते तर्कशास्त्रस्य ज्ञानार्थं कृता।

''बालानां सुखबोधाय क्रियते तर्कसङ्ग्रहः''

बालकानां कृते एषः ग्रन्थः अतीव उपयोगी अस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे महर्षिगौतमप्रणीतन्यायदर्शनस्य एवं कणादप्रणीतवैशेषिकदर्शनस्य सिद्धान्तानां वर्णनम् अस्ति।

काणादन्यायमतयोर्बालव्युत्पत्तिसिद्धये।
अन्नम्भट्टेन विदुषा रचितस्तर्कसंग्रहः॥

महर्षिणा गौतमेन षोडशपदार्थानां चर्चा कृता कणादेन च सप्तपदार्थानां चर्चा कृता। तर्कसंग्रहेऽपि सप्तपदार्थानां वर्णनं अन्नम्भटेन कृतम्।

© NCERT not to be republished

(ख) महर्षिणा गौतमेन वर्णिताः षोडशपदार्थाः-

1.प्रमाणम् 2.प्रमेयम् 3.संशयः 4.प्रयोजनम् 5.दृष्टान्तः
6.सिद्धान्तः 7. अवयवः 8. तर्कः 9.निर्णयः 10.वादः
11.जल्पः 12.वितण्डा 13.हेत्वाभासः 14.छलः
15.जातिः 16.निग्रहस्थानम्

(ग) अन्नम्भट्टानुसारेण सप्तपदार्थाः-

1.द्रव्यम् 2.गुणः 3.कर्म 4.सामान्यम्
5.विशेषः 6.समवायः 7.अभावः

महर्षिणा गौतमेन वर्णितषोडशपदार्थानाम् अन्तर्भावः अन्नम्भट्टस्य सप्तपदार्थेषु एव भवति।

सर्वेषां पदार्थानां सम्बन्धः विज्ञानेन सह अपि अस्ति। विज्ञाने पदार्थः (matter) इति नाम्ना वर्णितः। **यथा-**

Matter is any substance that has mass and takes up space by having volume. This includes atoms anything made up of these.

© NCERT not to be republished